International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 05-03-2026, Accepted: 05-04-2026, Published: 20-04-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 79-80

संशय की एक रात: रामकथा का आधुनिक बोध

रीना
शोधार्थी, हिंदी विभाग, गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय हिसार हरियाणा, भारत

सारांश
आधुनिकता किसी पुरानी रीति अथवा परंपरा के बदले से आती है। आधुनिकता समसामयिक हो भी सकती है अथवा नहीं भी। कबीर के विचार मध्ययुगीन होते हुए भी आधुनिक है, आधुनिक काल सापेक्ष नहीं बल्कि परिवर्तन सापेक्ष है, नए मूल्य की प्रतिष्ठा है। हिंदी साहित्य में आधुनिकता की शुरुआत लगभग 20वीं शताब्दी से मानी जाती है जिसमें साहित्य प्राचीन मध्ययुगीन समाज को त्याग कर आधुनिक भाव बोध ग्रहण कर रहा था। देश पर अंग्रेजों का शासन था इसलिए पश्चिम में हुए औद्योगीकरण का प्रभाव भारत में भी देखा गया जिसके फलस्वरूप सामंतवादी व्यवस्था का अंत हो रहा था उसका स्थान पूंजीवादी व्यवस्था ने ले लिया था। इस परिवर्तन के साथ समाज में नए परिवर्तन हुए, साथ ही साहित्य में भी अनेक परिवर्तन हुए। भारतेंदु तथा महावीर प्रसाद द्विवेदी नवजागरण की अग्रदूत माने जाते हैं जहां साहित्य रीतिवादी परंपरा से ग्रसित था और सामाजिक विषयों पर साहित्य लेखन का अभाव था। नवजागरण आंदोलन के साथ साहित्य समाज से जुड़ा इसी बदलते स्वरूप में राम कथा का स्वरूप भी बदला। आधुनिक युग में रामकथा से संबंधित अनेक ग्रंथ लिखे गए। इसी राम कथा की एक कड़ी नरेश मेहता द्वारा रचित खंडकाव्य 'संशय की एक रात' भी है।

मूल शब्दः संशय की एक रात, रामकथा, आधुनिक बोध, आधुनिकता, हिंदी साहित्य

संशय की एक रात नरेश मेहता द्वारा रचित राम कथा पर आधारित खंडकाव्य है। इस रचना में राम के जीवन की एक रात का संशय प्रस्तुत किया गया है। आधुनिक युग में राम के जीवन पक्ष पर लिखित यह रचना अपने ढंग की उत्कृष्ट कृति है जो राम के संशय के साथ–साथ आधुनिक जीवन के बोध और जीवन दर्शन पर विचार करती है। आधुनिक युग में मनुष्य जीवन के मूल्य और निरंतर नवीन चुनौतियों के मध्य राम का जीवन आदर्श कितना प्रासंगिक है इसको दर्शाया गया है। इस रचना के माध्यम से नरेश मेहता जी ने पौराणिक राम कथा को नए युग से जोड़कर इसे नया रूप देने का प्रयास किया है। कवि इस पौराणिक कथा के माध्यम से अपने युग की समस्या का अवलोकन किया है, और उन समस्याओं को हल करने का प्रयास किया।

यह काव्य राम के जीवन की उस रात पर लिखा गया है जब लंका युद्ध की सारी तैयारियां हो चुकी थी और राम संशयग्रस्त होकर रामेश्वरम के सिंधु तट पर टहल रहे थे। इस रचना की कथा को चार सर्गो में बांटा गया है।

1. सांझ का विस्तार ओर बालू तट
2. वर्षा भीगे अंधकार का आगमन
3. मध्य रात्रि की मंत्रणा और निर्णय
4. संदिग्ध मन का संकल्प और सवेरा

राम युद्ध को लेकर संशय से घिरे है क्योंकि वे युद्ध से शांति स्थापित करने के पक्षधर नहीं है, वे युद्ध को टाल देना चाहते है। इसी से उनके मन में निराशा और संशय उत्पन्न हो जाते है। सिंधु पर बालू तट बनने के पश्चात् लंका युद्ध की तैयारी शुरू हो गई है। राम युद्ध की समस्या से ग्रसित अपने भारी मन के साथ रामेश्वर के सिंधु तट पर टहल रहे हैं। वे होने ना होने या करने न करने के प्रश्नों से उलझे हुए हैं। राम युद्ध को नकारते हुए युद्ध को मनुष्य जाति के लिए विनाशकारी मानते हैं युद्ध की अनिवार्यता को त्यागना चाहते हैं। राम युद्ध को असभ्य कहते है जो मनुष्यता की धरती को रक्त रंजित कर देगा। इन सबके बावजूद भी युद्ध की तैयारी को देखते हुए निराशा से भर उठते हैं। ऐसे समय में उन्हें सीता स्मरण हो आती है और वे युद्ध के कारणों पर विचार करते हुए कहते हैं–

"जानते भी क्यों गये हम/स्वर्णमृग हित!/क्यों गये पथ भूल ??
उस वंचक के पदों में/सर्प बन सौमित्ररेखा/क्यों नहीं लिपटी ?
यह परिताप यह अनुताप –/अनुखन सालता है।/क्या सोचते होंगे जनकजी?
बन्धु – बान्धव और/पुरवासी सभी क्या कह रहे होंगे?
स्वयं सीता/सोचती होगी/क्या ??"[1]

प्रस्तुत संदर्भ से सीता स्मरण के साथ–साथ राम का परिताप ओर पश्चाताप भी दिखाई देता है। राम की ऐसी मनोदशा का विश्लेषण आज के युग में भी संदर्भित होता है जैसे राम की स्थिति उनका संशय आधुनिक मनुष्य की तरह टूटा हुआ, निराशा, हालातों से लड़ते हुए अपने अतीत और भविष्य की संभावनाओं में जीता है। राम परिस्थितियों में पड़े वह व्यक्ति दिखाई देते हैं जो अपने मन के संशय के साथ अपने कर्म के द्वंद्व में है। अपने साथ हो रही है सभी घटनाओं या समस्याओं के लिए वे स्वयं को उत्तरदयी समझते हैं और इस समझ के साथ ही अपने को दोष देते दिखाई देते हैं। लक्ष्मण को संबोधित करते हुए कहते हैं

"लक्ष्मण !/राम की इस विवशता को/सोच सकते हो ?
अन्य प्रायश्चित करें मेरे लिए,/दुःख भोगें, वनों में भटकें अकारण ही/बिना वनवास की आज्ञा मिले।
पिता की मृत्यु/विधवा जननियाँ/कौन है इनका निमित्त ?
पत्नी का हरण/पिता के मित्र जटायु का मरण/मेरे लिए–"[2]

राम का संवेदनशील मन सोचता है कि इस युद्ध के पीछे का कारण उनका व्यक्तिगत है। वे सीता को मुक्त कराने और सीता का अपहरण करने पर रावण से बदला लेने के लिए सभी को युद्ध में झोंक रहे है और इसके परिणाम में अनगिनत निर्दोष लोग मारे जाएंगे। वे स्वयं से प्रश्न करते हैं कि क्या व्यक्तिगत कारणों के चलते युद्ध की विभीषिका में इतने बड़े पैमाने पर लोगों को झोंकने और उसके बाद के परिणामों को वे वहन कर सकते हैं। राम का यह चिंतन और युद्ध को लेकर संशय मनुष्य के उस गुण को दर्शाता है जो उसे अन्य प्राणियों से अलग करता है। निश्चय ही नरेश मेहता राम के माध्यम से मनुष्य के इस गुण को जीवंत करना चाहते हैं, जो अपनी व्यक्तिगत समस्याओं के लिए अन्य को

हानि नहीं पहुंचाना चाहता और ऐसे समय द्वंद्व की स्थिति को महसूस करता है। राम कहते हैं,

"व्यक्तिगत मेरी समस्याएं/क्यों ऐतिहासिक कारणों को जन्म दें?"[3]

प्रस्तुत उदाहरण से स्पष्ट होता है कि यहां राम कोई अवतार नहीं बल्कि साधारण व्यक्ति का प्रतीक है और उनकी स्थिति और समस्या आधुनिक युग की समस्या दिखाई देती है। वे मानवीय मूल्यों की राम के संरक्षक है, यही मूल्यान्वेषी व्यक्तित्व उनकी संशयग्रस्त बातों से झलकता है। राम युद्ध को टालना चाहते हैं, कायरता के कारण नहीं बल्कि मानव जाति की उन्नति के लिए। राम का यह संशय एकाकी नहीं अपितु आधुनिक समय की भी यही दशा है। यह युग भी राम की तरह युद्ध को टाल देना चाहता है युद्ध चाहे आंतरिक हो या बाहरी उसे खत्म कर शांति के लिए अधीर है। राम की तरह ही मानव जाति भी युद्ध से संत्रास है। युद्ध के पश्चात सब ओर शांति स्थापित हो जाएगी इस पर राम बिल्कुल भरोसा नहीं करते बल्कि एक युद्ध को अनेक युद्ध का कारण मानते हैं, वे युद्ध को फेन कहते हैं।

"हनुमत वीर !/युद्ध की अनिवार्यता को जानता हूँ
अपने से अधिक/इन पृथुज्जन को मानता भी हूँ
किन्तु/इस युद्ध के उपरान्त/होगी शान्ति
इसका तो नहीं विश्वास।
बन्धु !/यह युद्ध/सम्भव है अनागत युद्ध का कारण बने।
तब/अनेकों लंका/अनेकों रावणों का जन्म हो।/सम्भव है।"[4]

इस काव्य के माध्यम से श्री नरेश मेहता जी ने खंडित व्यक्तित्व की चर्चा की है। यह समस्या नए युग से प्रासंगिक दिखाई देती है, क्योंकि नए युग में व्यक्ति की मानसिक स्थिति विक्षिप्त है। राम के साथ–साथ विभीषण भी अपनी समस्या से संघर्ष कर रहा है। विभीषण अपने ही राष्ट्र पर हो रहे आक्रमण के लिए साथ देने को लेकर चिंतित है। वह कहते हैं अपने ही राष्ट्र के विरुद्ध आक्रमण में मैं शामिल हूं आने वाली पीढ़ी मुझे देशद्रोही और राज्य लोभी कहेगी और अगर मैं राम का साथ ना दूं तो मुझे सत्य विरोधी पुकारा जाएगा। वे कहते हैं

"राम! मेरी आत्मा में भी यही है द्वन्द्व/क्या युद्ध/नियति है
हमारे सारे शुभाशुभ कर्म की?
कलजब हम नहीं केवल/वृद्ध, ठंडी शिला सा/इतिहास होगा।
जब हमारे तर्क तक मर जाएँगे/तब हमें क्या कहकर पुकारा जाएगा?
राष्ट्र संकट के समय/मैं आक्रमण के साथ था/राज्य पाने के लिए।"[5]

नरेश मेहता जी ने प्रस्तुत काव्य में आधुनिक युग के मनुष्य की संकल्पना राम में की है। जिस प्रकार से आधुनिक युग में द्वंद्वों में फंसे मनुष्य मात्र के व्यक्तित्व खंडित होते दिखाई देते है उसी प्रकार से राम भी दुविधा में पड़कर अपने अस्तित्व के प्रति अनभिज्ञ है।

"ओ मेरे आधे व्यक्तित्व के/अधूरे मन !
इन गूँगे संशयों/अधूरी शंकाओं/बहरे प्रश्नों का क्या होगा ?
मेरी अस्वीकृता स्वीकृति का क्या होगा? क्या होगा?"[6]

राम अपनी कर्तव्य की प्रतिबद्धता को भली भांति समझते हैं परंतु उनका स्वचेतन इसे स्वीकार नहीं कर पा रहा। राम संशय ग्रस्त हो अपने स्वचेतन को नहीं पहचान पा रहे। वे अपने को नियति के हाथों का खिलौना मात्र नहीं बनना देना चाहते हैं। वहीं दूसरी और लक्ष्मण दृढ़ संकल्पी है। लक्ष्मण अपनी लघुता को भी सार्थक समझते हैं। वे अपने अस्तित्व के प्रति सचेत है और अपने पुरुषार्थ में पूर्ण आस्था रखते हैं। परिस्थितियों और समय की मांग के अनुरूप अनेक अंतर्विरोधों के बाद राम उस निर्णय को स्वीकार कर लेते है जिससे वे संशय में थे। युद्ध के निर्णय को सबका निर्णय कहकर स्वीकारते है।

"मेरा चिन्तन खड्ग करेगा/और आचरण युद्ध बनेगा।
क्योंकि मैं निर्णय हूँ/हो चुका हुआ अब निर्णय हूँ/व्यक्ति नहीं।[7]

निष्कर्ष

संशय की एक रात के माध्यम से नरेश मेहता जी ने पौराणिक मिथक में आधुनिक बोध का प्रतिबिंब प्रस्तुत किया है। समकालीन युग में भी इस मिथक के सहारे आधुनिक मानव के संशय और खंडित व्यक्तित्व की धारणा को स्पष्ट करते हैं। आधुनिक युग के व्यक्ति विशेष की तरह ही राम में निराशा और अस्तित्व के प्रति व्याकुलता दिखाई देती है। राम को अपने सामाजिक संबंधों व कर्तव्य के प्रति बाध्यता संशयग्रस्त करती है। वह युद्ध की अनिवार्यता को टाल कर शांति की स्थापना करने के पक्षधर है।

सन्दर्भ

1. संशय की एक रात: श्री नरेश मेहता पृष्ठ संख्या–15 (लोकभारती प्रकाशन चौथा संस्करण 2025)
2. पूर्ववत्त, पृष्ठ संख्या–29
3. पूर्ववत्त, पृष्ठ संख्या–29
4. पूर्ववत्त, पृष्ठ संख्या–64
5. पूर्ववत्त, पृष्ठ संख्या–71
6. पूर्ववत्त, पृष्ठ संख्या–76
7. पूर्ववत्त, पृष्ठ संख्या–77